लसीका फाइलेरिया

हाल ही में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने [लसीका फाइलेरिया](#) (Lymphatic Filariasis) के लिये [वार्षिक राष्ट्रव्यापी मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (MDA) पहल](#) के दूसरे चरण का उद्घाटन किया।

- भारत का लक्ष्य एक मिशन-संचालित रणनीति के माध्यम से **वैश्विक लक्ष्य से तीन वर्ष पहले वर्ष 2027 तक लसीका फाइलेरिया का उन्मूलन** करना है।

लसीका फाइलेरिया:

- **परिचय:**
  - लसीका फाइलेरिया, जिसे आमतौर पर **हाथीपाँव रोग** (एलिफेंटियासिस) के रूप में जाना जाता है, **परजीवी संक्रमण के कारण होने वाला एक उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (Neglected Tropical Disease- NTD)** है जो **संक्रमित मच्छरों के काटने से** फैलता है।
  - यह रोग विश्व के उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में लाखों व्यक्तियों को प्रभावित करता है।
- **कारण एवं संचरण:**
  - **लसीका फाइलेरिया, फिलारियोडिडिया परिवार के नेमाटोड (राउंडवॉर्म)** के रूप में **वर्गीकृत परजीवियों के संक्रमण के कारण** होता है।
  - **ये धागे जैसे फाइलेरिया कृमि 3 प्रकार के होते हैं:**
    - **वुचेरेरिया बैन्क्रॉफ्टी (Wuchereria Bancrofti),** जो 90% मामलों के लिये उत्तरदायी होता है।
    - **ब्रुगिया मलाई (Brugia Malayi),** जो शेष अधिकांश मामलों का कारण बनता है।
    - **ब्रुगिया टिमोरी (Brugiya Timori),** भी इस रोग का कारण है।
- **लक्षण:**
  - लसीका फाइलेरिया संक्रमण में स्पर्शोन्मुख, तीव्र तथा गंभीर स्थितियाँ शामिल होती हैं।
    - गंभीर स्थितियों में इसमें **लिम्फोएडेमा (ऊतक सूजन) या एलिफेंटियासिस (त्वचा/ऊतक का मोटा होना) एवं हाइड्रोसील (अंडकोश की सूजन)** जैसे लक्षण देखे जाते हैं।
- **उपचार:**
  - [विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)](#) लसीका फाइलेरिया के वैश्विक उन्मूलन में तीव्रता लाने के लिये उपचार कर लिये **तीन दवाओं की सिफारिश** करता है। उपचार, जिसे **IDA** के रूप में जाना जाता है, में **आइवरमेक्टिन, डायथाइलकार्बामाज़िन साइट्रेट तथा एल्बेंडाज़ोल का संयोजन** शामिल है।
    - इसके तहत लगातार **दो वर्षों तक** इन दवाओं को देना शामिल है। वयस्क कृमि का जीवन मुश्किल से चार वर्ष का होता है, इसलिये **यह व्यक्ति को कोई हानि पहुँचाए बिना स्वाभाविक रूप से समाप्त** जाएगा।
- **वैश्विक खतरा और निवारक उपाय:**
  - **44 देशों में 882 मिलियन से अधिक लोग हाथीपाँव रोग/लसीका फाइलेरिया (Lymphatic Filariasis) के खतरे** का सामना करते हैं और उन्हें निवारक कीमोथेरेपी (Preventive Chemotherapy) की आवश्यकता होती है।
  - जोखिम वाली आबादी के लिये सुरक्षित दवा संयोजनों का उपयोग करके **मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (Mass Drug Administration- MDA)** एक निवारक दृष्टिकोण है।
  - **संक्रमण को फैलने से रोकने के लिये वर्ष 2000 से अब तक 9 अरब से अधिक लोगों का उपचार किया जा चुका है।**

- प्रगति एवं उपलब्धियाँ:

  - MDA के सफल प्रयासों से संचरण और संक्रमण के प्रसार में कमी आई है।
  - **740 मिलियन लोगों को अब निवारक कीमोथेरेपी की आवश्यकता नहीं है।**
  - वर्ष 2018 में 51 मिलियन लोग संक्रमित हुए जो वैश्विक उन्मूलन प्रयासों की शुरुआत के बाद से 74% की कमी दर्शाता है।
- **वेक्टर (रोगाणु) नियंत्रण और WHO का दृष्टिकोण:**
  - मच्छर नियंत्रण, जैसे- कीटनाशक-उपचारित जाल (Insecticide-Treated Nets) और इनडोर अवशिष्ट छिड़काव (Indoor Residual Spraying), निवारक कीमोथेरेपी के पूरक हैं।

- ◦ हाथीपाँव रोग के उन्मूलन हेतु WHO का वैश्विक कार्यक्रम **(WHO's Global Programme to Eliminate Lymphatic Filariasis- GPELF)** इस बीमारी को खत्म करने के लक्ष्य के साथ वर्ष 2000 में शुरू किया गया था।
    - GPELF **का लक्ष्य निरंतर कम संक्रमण दर हासिल करना और देखभाल प्रदान करके 80% स्थानिक देशों में लसीका फाइलेरिया के उन्मूलन** के सत्यापन के मानदंडों को पूरा करना है।
    - यह कार्यक्रम सभी स्थानिक देशों में पोस्ट-MDA निगरानी के लिये प्रयास करता है और अंततः MDA की आवश्यकता वाली आबादी को शून्य तक कम कर देता है।
- ◦ यह रणनीति संक्रमण को फैलने से रोकने और प्रभावित व्यक्तियों को आवश्यक देखभाल प्रदान करने पर केंद्रित है।

लसीका फाइलेरिया के उन्मूलन हेतु भारत की पहल:

- राष्ट्रव्यापी **मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन अभियान** स्थानिक क्षेत्रों में निवारक दवाओं की आपूर्ति करता है।
- विभिन्न हितधारकों, क्षेत्रों और गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से पहल के प्रभाव को बढ़ाना।
- **"जनभागीदारी (Jan Bhagidaari) और 'संपूर्ण सरकार (Whole of Government)' तथा 'संपूर्ण समाज (Whole of Society) '** दृष्टिकोण के माध्यम से भारत इस बीमारी को देश से खत्म करने में सक्षम होगा।"
- **MDA पहल के दूसरे चरण में लक्षित हस्तक्षेप के लिये 9 स्थानिक राज्यों के 81 ज़िलों पर ध्यान केंद्रित किया गया है (ये राज्य हैं असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश)।**
- राज्य-केंद्र के सहयोग से स्वास्थ्य देखभाल, निगरानी, रोकथाम और उपचार को बढ़ावा देना।
- स्वास्थ्य कर्मियों की उपस्थिति में दवा सेवन हेतु प्रोत्साहित कर अनुपालन को बढ़ावा देना।

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lymphatic-filariasis-2